# अर्द्धवार्षिक परीक्षा 2018-2019
## हिन्दी

कक्षा : IX
समय : 3 घंटे 15 मिनट पूर्णांक : 80

**खण्ड 'अ' के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। खण्ड 'ब' से किन्हीं चार प्रसंगों के प्रश्नोंतर लिखें। गद्य एवं पद्य से एक-एक प्रसंग करना अनिवार्य है।**

### खण्ड "अ" (भाषा – 40 अंक)

1. **निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर संक्षिप्त प्रस्ताव लिखें।** [15]

   (क) बूढ़े बरगद की आत्म कथा ।

   (ख) अटल बिहारी वाजपेयी – जीवन परिचय ।

   (ग) मेरी प्रसन्नता छिपाए नहीं छिप रही थी, बात दर असल यह थी कि......उपर्युक्त पंक्तियों से आरंभ करते हुए किसी घटना का वर्णन करें।

   (घ) 'केरल में बाढ़ का कहर' इस विषय में जानकारी देते हुए बताएँ कि क्या आपने उनकी किसी प्रकार से सहायता की ? वर्णन करें।

   (ङ) अपनी मांग की पूर्ति के लिए क्या 'हड़ताल' उचित है ? उपरोक्त विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए निबंध लिखें।

2. **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर पत्र लिखें :-** [7]

   (क) आपके मुहल्ले में आए दिन चोरियाँ हो रही हैं। उनकी रोकथाम के लिए गश्त बढ़ाने हेतु थानाध्यक्ष को पत्र लिखें।

*{Turn Over}*



Download From www.leseboa

(ख) अपने प्रिय शिक्षक अथवा शिक्षिका के उन गुणों का वर्णन करते हुए मित्र को पत्र लिखें जिनसे आप अत्यधिक प्रभावित हुए हैं।

3. **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दें :-**

वर्षों पुरानी बात है। दीनदयाल नाम के एक सेठ अजमेर में रहते थे। एक दिन उन्होंने एक पुस्तक में पढ़ा – 'गुरु के बिना ज्ञान नहीं और ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं। सेठ ने निश्चय किया कि एक ऐसे गुरु की तलाश की जाए जो बहुत ज्ञानी हो। बहुत से गुरुओं के पास गए। उन्हें जाँचा-परखा पर कोई खरा न निकला। परन्तु तलाश का अंत नहीं हुआ।

काफी दिन बीत गए। सेठ जी परेशान रहने लगे। एक दिन सेठानी ने कहा, 'आप परेशान क्यों होते हैं ? आप अपना काम करें। यह काम मुझ पर छोड़ दें। जो मिला करे उसे मेरे पास भेज दिया करें।' सेठजी सहमत हो गए। एक झंझट समाप्त हुआ। सेठानी ने पिंजड़े में एक कौआ पाला। जो भी महात्मा वहाँ आते, उनसे यही कहती – "देखिए मेरा पाला कबूतर अच्छा है न"।

अनेक संत आए। सभी कहते, "कबूतर कहाँ है, कौआ है।" परन्तु सेठानी अपनी बात पर अड़ी रहती। जब वे टस से मस नहीं होती तो संत क्रोध में भरकर उल्टी-सीधी बातें कहते और वापस चले जाते।

सेठानी ने हार नहीं मानी। यही क्रम चलता रहा। बहुतेरे संत आए और चले भी गए। कोई सेठानी की परीक्षा में खरा नहीं उतरा। जो छोटी-छोटी बातोंपर क्रोधित हो जाए, वह संत कैसा ? जो संत नहीं वह गुरु के योग्य नहीं।



(क) प्रस्तुत पद में कवि ने किसे उदार कहा है, और क्यों ? [3]

(ख) गीध (जटायु), सबरी व विभीषण के विषय में प्रसिद्ध अन्तरकथाओं का दो-दो पंक्तियों में वर्णन करें। [3]

(ग) तुलसीदास जी ने अपने मन को संबोधित करते हुए क्या कहा है ? पठित पद के आधार पर वर्णन करें। [2]

(घ) अर्थ लिखें : सरिस, विराग, उदार, सकल । [2]

---



Downloaded From www.icseboa